

यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्। उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम्।।

जो भोजन अधपका, रसरहित, दुर्गन्धयुक्त, बासी और अपशिष्ट है तथा अपवित्र भी है, वह भोजन तामस मनुष्य को प्रिय होता है।
श्रीमद्भगवद्गीता 17 / 10

स्वागत

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/370427 दिनांक 15.11.2021 के अनुसार डॉ. (सुश्री) मंजू ई.पी. ने 12.11.2021 से संस्थान के मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2021/370072 दिनांक 12.11.2021 के अनुसार डॉ. (सुश्री) रिचा कटियार ने 1.11.2021 से संस्थान के रासायनिक इंजीनियरी विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/371686 दिनांक 18.11.2021 के अनुसार डॉ. (सुश्री) नेहा कैलाश नवान्दर ने 12.11.2021 से संस्थान के विद्युत इंजीनियरी विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

पुनर्नियुक्ति

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2021/324996 दिनांक 20.5.2021 के अनुसार प्रो. (सुश्री) जयश्री बिजवे, ऑटोमोटिव अनुसंधान एवं ट्राइबोलॉजी केन्द्र (कार्ट) को संस्थान संविधि के पैरा 13 (2) के

अनुसार वर्तमान शैक्षिक सत्र के अंत तक अर्थात् 30.6.2022 तक के लिए कार्ट (CART) में प्रोफेसर के रूप में पुनर्नियुक्ति किया गया है।

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2021/324998 दिनांक 20.5.2021 के अनुसार प्रो. सुबिमान कुण्डू (गणित विभाग) को संस्थान संविधि के पैरा 13 (2) के अनुसार वर्तमान शैक्षिक सत्र के अंत तक अर्थात् 30.6.2022 तक के लिए गणित विभाग में प्रोफेसर के रूप में पुनर्नियुक्ति किया गया है।

त्यागपत्र स्वीकृत

- स्थापना अनुभाग-II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/E-2 / 2021/371815 दिनांक 18.11.2021 के अनुसार श्री प्रशांत, कनिष्ठ सहायक ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 17.11.2021 से स्वीकार कर लिया है। अतः श्री प्रशांत को 17.11.2021 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।
- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/370787 दिनांक 16.11.2021 के अनुसार डॉ. आज्ञापाल सिंह, पोस्ट डॉक्टरल फेलो (यांत्रिक इंजीनियरी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 5.12.2021 से स्वीकार कर लिया है। अतः डॉ. आज्ञापाल सिंह को

5.12.2021 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया जाएगा।

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2021/369910 दिनांक 12.11.2021 के अनुसार डॉ. दिलीप कुमार मैती, पोस्ट डॉक्टरल फेलो (यांत्रिक इंजीनियरी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 10.11.2021 से स्वीकार कर लिया है। अतः डॉ. दिलीप कुमार मैती को 10.11.2021 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

सेवानिवृत्तियाँ

संस्थान के निम्नलिखित संकाय एवं स्टाफ सदस्य अधिवर्षिता की आयु होने पर 30 नवम्बर, 2021 को अपराह्न में संस्थान से सेवानिवृत्त हो रहे हैं :-

प्रो. (सुश्री) जयश्री बिजवे, प्रोफेसर, ऑटोमोटिव अनुसंधान एवं ट्राइबोलॉजी केन्द्र



प्रो. (सुश्री) जयश्री बिजवे ने 30 जनवरी, 1995 को संस्थान के कार्ट (पूर्व में इटमैक) में वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी-II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 12 अगस्त, 1998 में आपको सहायक प्रोफेसर; 31 जुलाई, 2002 को सह प्रोफेसर एवं 26 अक्टूबर, 2006 को प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया गया।

2013 में आपको उच्चतर अकेडमिक ग्रेड दिया गया तथा 2016 में रिलायन्स चेरर प्रोफेसर से सम्मानित किया गया।

आपने भा.प्रौ.सं. दिल्ली से एम.टेक. (1984) तथा पीएच.डी. (1989) की उपाधि प्राप्त की। आपने 25 पीएच.डी. थिसिस का मार्गदर्शन किया (23 पूर्ण तथा 2 समाप्त होने की कगार पर हैं) तथा अनुप्रयुक्त अनुसंधान क्षेत्रों में 77 एम.टेक. थिसिस का पर्यवेक्षण किया। अन्तरराष्ट्रीय जर्नलों में आपके 215 से अधिक प्रकाशन प्रकाशित हुए हैं। दो भारतीय पेटेन्ट तथा एक फ्रेंच पेटेन्ट का श्रेय आपको जाता है। आपके दो पीएच.डी. विद्यार्थियों ने फिट का 'सर्वश्रेष्ठ थिसिस अवार्ड' प्राप्त किया है।

आपने DST, SERB तथा CSIR की 8 अन्तरराष्ट्रीय जर्नलों तथा 14 कार्यक्रमों में सम्पादकीय बोर्ड के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की/कर रही हैं। आपने कई विदेशी/भारतीय विश्वविद्यालयों तथा उद्योगों के साथ सहयोग किया तथा कई अन्तरराष्ट्रीय परामर्श परियोजनाएं पूर्ण की।

प्रो. सुश्री बिजवे अपने सहकर्मियों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय संकाय रही हैं।

प्रो. सुबिमान कुण्डू, प्रोफेसर, गणित विभाग



प्रो. सुबिमान कुण्डू ने 30 जनवरी, 1992 को संस्थान के गणित विभाग में लेक्चरर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था।

30 दिसम्बर, 1993 में आपको सहायक प्रोफेसर, 30 अक्टूबर, 2006 को सह प्रोफेसर एवं 31 दिसम्बर, 2012 को प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया गया।

प्रो. सुबिमान कुण्डू अपने सहकर्मियों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय संकाय रहे हैं।

श्रीमती शिव देवी (50113), हेल्पर, निर्माण संगठन (बागवानी)



श्रीमती शिव देवी ने 14 अगस्त, 1985 को संस्थान में 196-232 / -रु. (संशोधित 750-940) के वेतनमान में क्लास-IV के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था।

1 सितम्बर, 1990 को आर. ऐन्ड सी.डी. एस. के अन्तर्गत आपको 800-1150 / 2650-4000 का वेतनमान; 1 सितम्बर, 2000 को एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत 3050-4590 / -रु. का उन्नयन तथा 1 सितम्बर, 2010 को इसी योजना के अन्तर्गत आपको 5200-20200 / -रु. + 2000 रु. के ग्रेड वेतन के साथ उन्नयन दिया गया। श्रीमती शिव देवी एक कर्मठ एवं मेहनती हेल्पर रही हैं।

श्री विजय पाल (50060), अटेन्डेन्ट, कुसुमा जैव विज्ञान स्कूल



श्री विजय पाल ने 20 जनवरी, 1986 को संस्थान में 750-940 के वेतनमान में क्लास-IV क्लीनर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था।

1 फरवरी, 1991 को आर. ऐन्ड सी.डी.एस. के अन्तर्गत आपको 800-1150 / 2650-4000 / -रु. के वेतनमान में चयनित किया गया। 1 फरवरी, 2001 को एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत 3050-4590 / -रु. में उन्नयन तथा 1 फरवरी, 2011 को इसी योजना के अन्तर्गत आपको 2000 / -रु. ग्रेड वेतन में उन्नयन दिया गया। 24 अगस्त, 2016 को आपको अटेन्डेन्ट के रूप में पदनामित किया गया। श्री विजय पाल एक कर्मठ एवं मेहनती अटेन्डेन्ट रहे हैं।

संस्थान समुदाय उपरोक्त संकाय एवं स्टाफ सदस्यों को भावभीनी विदाई देते हुए उनके एवं उनके परिवार के लिए सुख, समृद्धि एवं शांतिमय जीवन की कामना करता है।

आधुनिक भारत के पहले विज्ञानी

(बालेन्दु शर्मा 'दाधीच' विज्ञान व तकनीकी विषयों के जानकार)

रेडियो तरंगों के आविष्कारक जगदीश चंद्र बोस आधुनिक भारत के पहले विज्ञानी थे। आज जिस वायरलेस तकनीक का हम इस्तेमाल कर रहे हैं, वे उसके जनक थे। उनकी ख्याति दुनियाभर में फैली थी। अपने वैज्ञानिक आविष्कारों से उन्होंने देश का मान बढ़ाया। उनके नाम पर चंद्रमा पर मौजूद

एक क्रेटर का नाम रखा गया है। आपको बताते चलें कि इतालवी आविष्कारक मारकोनी को 1909 में कार्ल फर्डिनेंड ब्राउन के साथ भौतिक विज्ञान का नोबेल पुरस्कार दिया गया था। कारण था वायरलेस टेलीग्राफी के विकास में उनका योगदान। सीधे शब्दों में कहें तो रेडियो का आविष्कार। मारकोनी ने 1896 में रेडियो संबंधी आविष्कार का पेटेंट करवाया था। हकीकत में भारत के महान विज्ञानी जगदीश चंद्र बोस एक साल पहले ही कोलकाता के टाउनहाल में 75 फीट की दूरी तक रेडियो तरंगों के प्रसारण का प्रदर्शन कर चुके थे। उन्होंने मरकरी कोहेरर नामक रेडियो तरंग रिसेवर का इस्तेमाल करते हुए 75 फीट दूर से ही एक घंटी बजाने और बारूद में विस्फोट करने का कारनामा कर दिखाया था, लेकिन उन्हें न तो नोबेल पुरस्कार मिला और न ही श्रेय, क्योंकि उन्होंने दर्जनों दूसरे भारतीय विज्ञानियों की तरह अपने आविष्कार को पेटेंट नहीं करवाया। उनका मानना था कि वैज्ञानिक खोजों का लाभ सबको मिलना चाहिए।

वायरलेस दूरसंचार के जनक: बोस को पहला आधुनिक भारतीय विज्ञानी माना जाता है और वायरलेस दूरसंचार के जनक के रूप में उनकी ख्याति है। नोविल मोट के अनुसार बोस अपने समय से कम से कम 60 साल आगे थे। भौतिकी के साथ जीव विज्ञान में भी उनकी गहरी रुचि थी और उन्होंने ही पहली बार सिद्ध किया था कि वनस्पतियाँ भी सजीव हैं। जानवरों की ही तरह उनका भी जीवन चक्र होता है। पौधों में विभिन्न प्रकार के उत्तेजकों का विश्लेषण करने के लिए उन्होंने क्रैस्कोग्राफ नाम के उपकरण का आविष्कार किया था। वे यह सिद्ध करने में सफल रहे कि वनस्पतियाँ भी दर्द का अनुभव कर सकती हैं। 30 नवंबर, 1858 को आज के बांग्लादेश में स्थित फरीदपुर (जिला मैमनसिंह) नामक स्थान पर उनका जन्म हुआ था। उनकी शुरुआती शिक्षा बांग्ला माध्यम से हुई थी। उच्च शिक्षा कोलकाता के सेंट जेवियर्स में हुई। भौतिक विज्ञान में स्नातक करने के बाद वे आगे पढ़ाई के लिए इंग्लैंड चले गए। जीव विज्ञान में अपनी रुचि के कारण वे डॉक्टर बनना चाहते थे और लंदन

विश्वविद्यालय में पढ़ाई करना चाहते थे। एक ख्याल सिविल सर्विसेज में जाने का भी था, जो उस समय पढ़े-लिखे नौजवानों के बीच बहुत लोकप्रिय सरकारी सेवा थी। लेकिन बीमारी के कारण मेडिकल की पढ़ाई का और पिता की नापसंदगी के कारण सिविल सर्विसेज में जाने का इरादा त्यागना पड़ा। आखिरकार उन्होंने कैंब्रिज के क्राइस्ट कालेज से 1884 में स्नातक की उपाधि हासिल की। उसी साल यूनिवर्सिटी कालेज लंदन से बी.एससी. की उपाधि भी ली। इसके 12 साल बाद 1896 में उन्हें

यूनिवर्सिटी कालेज से ही डॉक्टर ऑफ साइंसेज (डीएससी) की उपाधि मिली। 1885 से 1915 तक वे प्रेसिडेंसी कालेज, कोलकाता में प्रोफेसर रहे। भारत के दो महान विज्ञानी मेघनाद साहा और सत्येन्द्र नाथ बोस उनके शिष्य भी रहे। 1917 में उन्होंने कोलकाता में प्रसिद्ध बोस रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना भी की, जो भारत में विज्ञान के सबसे प्रतिष्ठित संस्थानों में गिना जाता है। 23 नवम्बर, 1937 को उनका निधन हुआ था।

—साभार दैनिक जागरण
23 सितंबर, 2021

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) के अंतर्गत अनिवार्य रूप से द्विभाषी जारी किए जाने वाले कागजात

- 1 सामान्य आदेश / General Orders
- 2 संकल्प / Resolution
- 3 परिपत्र / Circulars
- 4 नियम / Rules
- 5 प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन / Administrative or other reports
- 6 प्रेस विज्ञप्तियाँ / Press Release/Communiques
- 7 संविदाएँ / Contracts
- 8 करार / Agreements
- 9 अनुज्ञप्तियाँ / Licences
- 10 निविदा प्रारूप / Tender Forms
- 11 अनुज्ञा पत्र / Permits
- 12 निविदा सूचनाएँ / Tender Notices
- 13 अधिसूचनाएँ / Notifications
- 14 संसद के समक्ष रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज पत्र / Reports and documents to be laid before the Parliament

राजभाषा हिन्दी के अनुसार राज्यों का वर्गीकरण

- क्षेत्र क** — बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र।
- क्षेत्र ख** — गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र।
- क्षेत्र ग** — खंड (1) और (2) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र।

राजभाषा नियम 1976 नियम 5

राजभाषा नियम 1976 के नियम 5 के अनुसार हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर आवश्यक रूप से हिंदी में दिए जाएं (अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों की पावती हिंदी में भेजे)। अतः सभी विभाग/केन्द्र/अनुभाग/प्रकोष्ठ/एकक आदि से अनुरोध है कि वे हिंदी में प्राप्त सभी पत्रों का उत्तर केवल हिंदी में दें और उनका रिकॉर्ड रखें।

सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में भाषा

‘सूचना प्रौद्योगिकी’ विज्ञान के अन्य विषयों की तरह एक विषय है। इसे हम संक्षेप में बोलचाल में प्रायः ‘इन्फोटेक’ या ‘आई.टी.’ के नाम से जानते हैं। पिछले कुछ वर्षों में इस वैज्ञानिक विषय का दायरा इतना अधिक बढ़ चुका है कि हमारा सारा जीवन किसी न किसी रूप में इससे प्रभावित है। आज हमें सर्वत्र सूचना प्रौद्योगिकी का शोर सुनाई देता है। अतः इसे सूचना क्रांति का नाम भी दिया गया है। इन्टरनेट आज प्रायः सूचना प्रौद्योगिकी का पर्याय बन गया है। जन-संचार के माध्यम भी सूचना प्रौद्योगिकी के ही प्रतिनिधि है। इस विचार से जैसे तो सूचना प्रौद्योगिकी के दो ही घटक हैं—सूचना (Information) और प्रौद्योगिकी (Technology)। लेकिन, भारत के संदर्भ में इसका तीसरा घटक भी है—भाषा। जैसा कि प्रो. सूरजभान कहते हैं कि—जिन देशों की मात्रभाषा अंग्रेजी है, उनके लिए भाषा का घटक महत्वपूर्ण नहीं है लेकिन भारत जैसे देश में जहां अंग्रेजी समझने वालों की संख्या केवल पांच प्रतिशत है और जहां कम से कम 22 प्रमुख मान्यता प्राप्त भाषाएं हैं, भाषा का घटक कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण हो जाता है। ऐसे विशाल समुदाय के लिए उन्हीं की भाषा में सूचना उपलब्ध कराना अपने में एक काफी बड़ा दायित्व है। सूचना प्रौद्योगिकी के संदर्भ में सूचना से तात्पर्य उस तथ्य या सामग्री से हैं, जो हमें इन्टरनेट या वेब के माध्यम से प्राप्त होती है। कम्प्यूटर, मोबाइल फोन और टेलिविजन आदि भी सूचना इन्हीं के माध्यम से ही लेते देते हैं। मौटे तौर पर इंटरनेट से प्राप्त सूचनाओं को दो प्रकार से समझा जा सकता है— सामान्य सूचना और ज्ञानात्मक सूचना। सामान्य सूचनाएं प्रायः ऐसी होती हैं जिनका महत्व तात्कालिक होता है। जैसे सामाजिक, व्यक्तिगत, राजनीतिक, व्यावसायिक, व्यापारिक या वाणिज्यिक सूचनाएं। इसके अलग ज्ञानात्मक सूचनाओं का संबंध ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से होता है। ऐसी सूचनाएं, सामान्य सूचनाओं की

तुलना में अधिक स्थाई होती है। इनका उपयोग हम संदर्भ ग्रंथों (Reference tools) की तरह कर सकते हैं। जैसे—ज्ञान विज्ञान विषयक जानकारी, शब्दकोष, विश्वकोष, थिसॉरस, साहित्य, संस्कृति, कला, इतिहास, भूगोल आदि।

‘प्रौद्योगिकी (Technology)’ से तात्पर्य उन तकनीकी उपकरणों से है, जो दृश्य—श्रव्य, रूप में सूचना को एक छोर से दूसरे छोर तक पहुंचाने के माध्यम का कार्य करते हैं। आज इस टेक्नोलॉजी का विकास बहुत अधिक हो रहा है और दो से अधिक प्रौद्योगिकी इकाइयों को जोड़कर एक करने का प्रयास भी किया जा रहा है, इसके फलस्वरूप कई नई सुविधाएं प्राप्त हो रही हैं। उदाहरण के लिए इंटरनेट को सीधा टेलीविजन के पर्दे पर देखना संभव हो रहा है। मोबाइल फोन पर ही इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है। इसी से ई—मेल तथा फैक्स भेजना संभव हो गया है। ‘भाषा’—सूचना प्रौद्योगिकी का तीसरा किंतु भारत की दृष्टि से मुख्य घटक है। इसे सूचना—प्रौद्योगिकी का ‘मुख्य पृष्ठ’ तक कहा जा सकता है, क्योंकि इसकी सहायता से ही सूचनाएं तैयार की जाती हैं तथा भेजी जाती हैं और प्रयोक्ता पर्दे पर अंकित सूचना को इसी के जरिए ही ग्रहण करता है। यदि कोई प्रयोक्ता भाषा को नहीं जानता, निरक्षर है तो वह सूचना प्रौद्योगिकी का पूरी तरह लाभ नहीं उठा सकता। आज इंटरनेट पर लगभग 80% सामग्री अंग्रेजी में उपलब्ध है। इसलिए अंग्रेजी भाषा—भाषी देशों के प्रयोक्ताओं को कोई कठिनाई नहीं होती। यह समस्या उन देशों की होती है जहां का भाषा समाज अंग्रेजी नहीं जानता और अपनी—अपनी स्थानीय भाषाओं का ही इस्तेमाल करते हैं इसलिए भारत के संदर्भ में यह आवश्यक है कि इंटरनेट की तथ्य सामग्री लोगों तक भारतीय भाषाओं के माध्यम से पहुंचे।

इस संबंध में दो समाधानों का प्रायः जिक्र किया जाता है भाषा का स्थानीकरण और प्रौद्योगिकी का विस्तारीकरण।

स्थानीकरण से तात्पर्य है कि, इंटरनेट की कथ्य सामग्री को प्रयोक्ताओं की स्थानीय भाषाओं में प्रस्तुत करना। इसके फलस्वरूप इंटरनेट में प्रदर्शित सभी सूचना सामग्री भी हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध होनी चाहिए ताकि अधिक से अधिक भारतीय प्रयोक्ता इसे समझ सकें। इस विशाल सामग्री को भारतीय भाषाओं में लाने के लिए अनुवाद का सहारा लिया जा सकता है। प्रौद्योगिकी के विस्तारण से तात्पर्य है कम्प्यूटर इंटरनेट और सूचना प्रौद्योगिकी के तकनीकी उपकरणों को दूरस्थ स्थानों, गांवों, कस्बों तथा शहरों में सस्ते दामों पर मुहैया कराना।

भारत जैसे बहुभाषी देश में अधिक से अधिक लोगों को उनकी अपनी भाषा में सूचना और सेवाओं के लिए सार्वभौमिक पहुंच उपलब्ध कराना अंतर्निहित प्राथमिक चिंता और चुनौतीपूर्ण विषय है। इस दिशा में कई प्रयास किए जा रहे हैं। कुछ प्रमुख प्रयासों में क्रॉस लिंगुअल इंफर्मेशन एक्सेस एंड रिट्रिवल, मानव मशीन इंटरफेस प्रणाली, स्वचालित भाषण पहचान (एएसआर), टेक्स्ट टू स्पीच सिस्टम (टीटीएस), भाषा प्रसंस्करण और वेब उपकरण, भारतीय भाषाओं में आईटी उपकरण और समाधानों का अनुकूलन, भाषा प्रौद्योगिकी में मानव संसाधन विकास शामिल हैं।

भारत में, बहुभाषी वेब सामग्री त्वरित विकास के लिए तैयार है और इसलिए, वहाँ उपयोगकर्ता के अनुकूल और लागत प्रभावी उपकरण, अनुप्रयोगों और ऐसी सूचना सामग्री प्रदान करना एक बड़ी चुनौती है, जो विभिन्न भारतीय भाषाओं में आईसीटी बुनियादी अवसंरचना के लिए पहुंच सक्षम बनाते हैं। इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम (भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास) चल रहा है, जिसका उद्देश्य भाषा बाधा के बिना मानव—मशीन संपर्क की सुविधा के लिए सूचना संसाधन उपकरण और

प्रौद्योगिकी का विकास; बहुभाषी ज्ञान संसाधनों का सृजन और मूल्यांकन और अभिनव उपयोगकर्ता उत्पादों और सेवाओं को विकसित करने के लिए उन्हें एकीकृत करना है। प्राथमिक उद्देश्यों में सभी 22 आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त भारतीय भाषाओं के लिए सॉफ्टवेयर उपकरण और अनुप्रयोग विकसित करना, भविष्य की प्रौद्योगिकियों के सहयोगी विकास में योगदान करना जिसके परिणामस्वरूप अभिनव उत्पाद और सेवाएं उत्पन्न होंगी, भाषा प्रौद्योगिकी उत्पादों के प्रसार हेतु एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करना और सभी स्तरों पर समाधान और मानकीकरण सेवाएं उपलब्ध कराना है।

सूचना प्रौद्योगिकी के तहत्व को सामाजिक विकास तथा जन कल्याण के उद्देश्यों के साथ जोड़कर भलीभांति समझा जा सकता है। सूचना क्रांति के इस युग में सूचना अंतर्संबंधों की व्याख्या, शिक्षा एवं विकास के साथ ही मनोरंजन के नये आयाम सामने आए हैं। कम्प्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आज जो नया ज्ञान विस्फोट हुआ है वह भाषा में भी एक मौन क्रांति का वाहक बनकर आया है। फलस्वरूप आज भाषा के कलेवर और उसकी आंतरिक क्षमता में भी एक विस्फोट की स्थिति पैदा हो चुकी है। भाषा के क्षेत्र में यह सारा परिवर्तन इतनी तेजी से हो रहा है कि हम उसका ऐतिहासिक आंकलन करने में असमर्थ हैं। अभी तक भाषा को मनुष्य की आवश्यकताओं को ही पूरा करना पड़ता है, बल्कि मशीन और कम्प्यूटर की नित नई भाषाई मांगों को भी पूरा करना पड़ रहा है। अतः कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी की नई भूमिकाओं के निर्वाह के लिए भाषा वैज्ञानिक भाषा प्रयोगों की असीम संभावनाओं की एक बार फिर से टटोल रहे हैं और भाषा की प्रकृति और स्वरूप पर पुनर्चिंतन कर भाषा की नई गहराइयों का पता लगा रहे हैं।

— डॉ. नीरज चौरसिया